PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

जनवरी 2006 ISSUE 0106 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज लैटर

बाइबिल : प्रभु की वाणी, आत्मा और जीवन

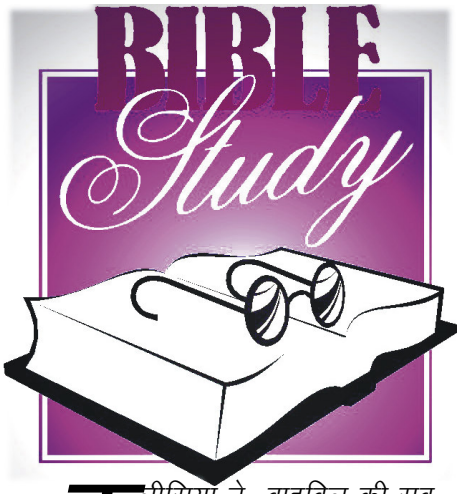

कलीसिया ने बाइबिल की सब रचनाओं को मान्यता प्रदान की है, क्योंकि कलीसिया इन्हें ईश्वर की वाणी समझती है। बाइबिल की रचनाँए अद्वितीय और अनन्य रुप से ईश्वर की वाणी हैं–ऐसा विश्वास कलीसिया का है। तिमथी के नाम पत्र लिखते समय पौलुस ने यह बात स्पष्ट कर दी है: "धर्मग्रन्थ तुम्हें उस मुक्ति का ज्ञान दे सकता है, जो येशु मसीह में विश्वास करने से प्राप्त होती है। पूरा धर्मग्रन्थ ईश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। वह शिक्षा देने के लिए, भ्रान्त धारणाओं का खण्ड़न करने के लिए, जीवन के सुधार और सदाचरण का प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, जिसमें ईश्वर–भक्त सुयोग्य और हर प्रकार के सत्कार्य के लिए उपयुक्त बन जायें।" ***(2 तिमथी 3:15-17)***

ईश्वर ने बाइबिल की पुस्तकों की रचना में किस प्रकार प्रेरणा प्रदान की थी, जिसके कारण ये पुस्तकें ईश्वर की वाणी कही गयी हैं, यह एक दिव्य रहस्य है। हमारा विश्वास है कि ईश्वर के पुत्र ने इस प्रकार देहधारण किया कि पूर्ण रुप से ईश्वर रहते हुए भी वह पूर्ण रुप से मनुष्य बन गये। ऐसे ही यह भी कहा जा सकता है कि बाइबिल की रचनाँए पूर्ण रुप से मनुष्यकृत हैं, फिर भी उनमें ईश्वर के शब्द अवतरित हुए हैं। अन्तिम विश्लेषण में यह एक दिव्य रहस्य है।

बाइबिल की पुस्तकें मानव द्वारा रचित हैं और ईश्वर द्वारा भी। हम समझ सकते हैं कि मानवीय साहित्यिक रचना क्या है। किन्तु ईश्वरीय प्रेरणा तो अदृश्य कृपा है और वह पूर्णतः रहस्मय है। उसकी सहायता से पवित्र लेखकों ने अपनी स्वतन्त्र प्रतिभा और अपनी व्यक्तिगत शैली अक्षुण्ण रखते हुए, तथा देश –काल की सीमाओं में आबद्ध रह कर वही लिखा, जो ईश्वर चाहता था।

पवित्र लेखक एक दिव्य प्रेरणा के पात्र थे, जिससे उन्होंने मनुष्यजाति के लिए ईश्वर का सन्देश लिखा तथा ईश्वर के सन्देश के प्रभाव के दायरे में आये दस शताब्दियों के स्त्री–पुरुषों, उनके विश्वासों और संशयों, वीरता और कायरता, सफलता और विफलता धर्म और अधर्म का वृत्तान्त लिपिबद्ध किया। बाइबिल से हम यह जान सकते हैं कि किस प्रकार ईश्वर मनुष्यजाति के साथ प्रेम का सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है तथा मनुष्यों की प्रतिक्रिया कैसी होती है। इस्राएल के साथ ईश्वर के प्रेम की कथा मूसा के द्वारा प्राचीन विधान की स्थापना पर आधारित है। बाइबिल का यह खण्ड प्राचीन विधान कहलाता है। इस्राएली वंश में उत्पन्न येशु मसीह ने किस प्रकार समस्त मनुष्यजाति के साथ प्रेम के विधान की स्थापना की, यह इसके उत्तरार्ध में पाया जाता है, जो नवीन विधान कहलाता है। बाइबिल की प्रामाणिकता की व्याप्ति ईश्वर और मनुष्यों के बीच के धार्मिक सम्बन्ध तक है। अन्य क्षेत्रों में, जैसे इतिहास, विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा, भूगोल आदि में इसमें आधिकारिक प्रवचन नहीं पाये जाते हैं।

इससे पाठक सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि बाइबिल मात्र प्राचीन साहित्य की बहुमूल्य मंजूषा नहीं है, न ही इस्राएली प्रजा के धार्मिक और नैतिक सिद्धान्तों का विचित्र संकलन है। बाइबिल कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसमें किसी लेखक ने ईश्वर के विषय में लिखा है। बाईबिल प्रधानतः एक ऐसा ग्रन्थ है, जिस में ईश्वर

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

6-मासीय/ 181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

"पवित्र–बाइबिल" हम कह सकते हैं, मनुष्यों के शब्दों में ईश्वर का वचन है, दैवीय प्रकाशना की अभिव्यक्ति है, विश्वास की बड़ी पुस्तक है, मनुष्य की मुक्ति का इतिहास है, ईश्वरीय अनुभवों से भरे ग्रन्थों का समूह है इत्यादि।"बाइबिल" शब्द मूल रुप से यूनानी भाषा के शब्द "बिबलिया" (Biblia) से आता है जिसका अर्थ है –किताबें। और इसलिए "पवित्र बाइबिल" उन ग्रन्थों (किताबों) का एक समूह है जो शताब्दियों से ईश्वरीय प्रेरणा द्वारा ईश्वर द्वारा चुने साधारण व्यक्तियों ने लिखे हैं और जिन्हें कलीसिया ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित स्वीकार किया है। अतः जो आत्मा की प्रेरणा द्वारा लिखी गई है उसे साधारण मिट्टी का बना भौतिक मनुष्य समझ नहीं पायेगा जब तक उसे भी ईश्वर का आत्मा न समझाये, जब तक वह विनम्र होकर पूर्ण समर्पण के साथ ईश्वर का ज्ञान, ईश्वरीय प्रज्ञा ग्रहण करने के लिए ईश्वर की कृपा से तैयार न हो जाये। "पवित्र बाइबिल" मुख्य रुप से दो भागों में विभाजित है– ***पुराना नियम या विधान*** और ***नया नियम या विधान।*** पवित्र बाइबिल का ***नया विधान*** प्रभु येशु के जन्म से लेकर प्रथम कलीसिया के इतिहास (पहली शताब्दी इसवीं तक) का वर्णन व प्रेरितो के अनुभवों, कार्यों व समस्याओं इत्यादि का उल्लेख है।

पवित्र बाइबिल समस्त मानव जाति के लिए, बच्चे, बड़े व बूढ़ों के लिए है। वह पुराना होते हुए भी निरन्तर सामयिक है। इसलिए ईश्वरीय प्रेम, ज्ञान, शान्ति, आनन्द व विश्वास प्राप्त करने के लिए बाइबिल का पाठ हमें प्रतिदिन करना चाहिए। हमें ईश्वर के वचन द्वारा मिलने वाली शिक्षाँए व सत्य हमारे जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक, अमूल्य व अत्यन्त लाभदायक हैं। इसलिए इस वर्ष हम आगामी 6प्रकाशनों (अपने मासिक समाचार पत्र में) आपके लिए बाइबिल के "नया–नियम"

(शेष भाग पृष्ठ3 पर) ✯

"आप लोग पुत्र ही हैं। इसका प्रमाण यह है कि ईश्वर ने हमारे हृदयों में अपने पुत्र का आत्मा भेजा है, जो यह पुकार कर कहता है - "अब्बा! पिता!" (गलातियों 4:6)

क्रिसमस पर जीवन-धाम में दस हज़ार से भी अधिक लोगों की भीड़ जमा हुई

*प्रभु को लाखों बार स्तुति और धन्यवाद, महिमा और सम्मान क्योंकि उन्होंने अपने जन्मदिन के अवसर पर हज़ारों लोगों को "जीवन–धाम" लाकर अपनी महिमा व शक्ति प्रकट की। **10** हज़ार (छोटे बच्चों को छोड़) से भी अधिक लोग जब उस मैदान में एकत्रित हुए तो वह नज़ारा देखते ही बनता था। अचरज की बात यह की इतने लोगों की उपस्थिति के बावजूद भी किसी पुलिसकर्मी की सहायता नहीं लेनी पड़ी। सब कुछ शान्तिपूर्ण ढ़ंग से सम्पन्न हो गया। क्रिसमस कैरल (गीत) गाते समय सभी को पूड़ी–हल्वा बाँटा गया। सेन्टा क्लॉस को देखते ही सभी के अन्दर एक उमंग की लहर दौड़ गई। प्रार्थना खत्म होते ही पटाखे जलाये गये और लोग ढ़ोल बजते ही नाचकर अपनी खुशी प्रकट करने लगे। शाम को जीवन–धाम सैक्टर–**22** में भी लोग इतनी भारी संख्या में एकत्रित हो गये थे कि वहाँ से बाहर निकल पाना या अन्दर जाना असम्भव सी बात थी। क्रिसमस कैरल गाये गये और केक बाँटा गया। फिर माननीय फादर जॉन्सन ने आकर पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया और सभी को बड़े दिन का शुभ संदेश सुनाया। यह ईश्वर की कृपा व बुलाहट है, उनका प्रेम है जिसके कारण इतने लोग जीवन–धाम में प्रभु येशु का जन्मदिन मनाने के लिए एकत्रित हो गये। इन कार्यक्रमों की सफलता के लिए व सभी मिली कृपाओं के लिए पिता परमेश्वर व प्रभु येशु को हम लाखों बार धन्यवाद व स्तुति देते हैं। साथ ही सन्त अन्थोनी कॉन्वेन्ट के सभी धर्मबहनों व सभी प्रेषितों को (पूड़ी–हल्वा की पैकिंग व अन्य कार्यों के लिए), राजू हल्वाई व उसके 20 सहयोगी कर्मचारियों को (समय पर स्वादिष्ट पूड़ी–हल्वा बनाने के लिए), व अन्य युवक–युवतियों, बच्चों और सहयोगी विश्वासियों को(पूड़ी–हल्वा के वितरण व अन्य कार्यों के लिए) हम तहेदिल से धन्यवाद देते हैं जिन सब ने मिलकर हमारी मदद की व हमारे कार्यक्रम को सफल बनाया। आल्लेलूया! आल्लेलूया!*

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)★

*मनुष्य को सम्बोधित करता है। पवित्र लेखक इस सच्चाई के साक्षी है : "ये तुम्हारे लिए निरे शब्द नहीं है, बल्कि इन पर तुम्हारा जीवन निर्भर है" **(विधि-विवरण 32:47)**। "इनका विवरण दिया गया है, जिससे तुम विश्वास करो कि ईसा मसीह ही ईश्वर के पुत्र है और विश्वास करने से उनके नाम द्वारा जीवन प्राप्त करो।" **(योहन 20:31)***

बाइबिल पढ़ते समय इस बात की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इस पाठ में आमन्त्रण का भाव निहित है। इसमें लेखक पाठकों का महत्त्वपूर्ण सन्देश सम्प्रेषित करते हैं। पाठक यह आमन्त्रण अस्वीकार कर, साहित्य अथवा इतिहास के रुप में भी बाइबिल पढ़ सकता है। किन्तु वह आमन्त्रण स्वीकार भी कर सकता है। तभी वह यथोचित पाठ प्रारंभ करता है। ऐसे पाठ में पाठक लेखक के साथ संवाद प्रारम्भ करने को तत्पर होता है। लेखक अपने विश्वास का साक्ष्य देता है और वही विश्वास पाठक में उत्पन्न करता है। ऐसे संवाद में पूरुषार्थ और मानव अस्तित्व के मूलभूत प्रश्न उठते हैं। यद्यपि बाइबिल और उस में प्रतिपादित विश्वास, जिसको अपनाने के लिए लेखक आग्रहपूर्ण आमन्त्रण देता है, इतिहास विशेष पर आधारित है, तथापि समस्त मानव–इतिहास उनका लक्ष्य है। बाइबिल के लेखक ऐसे सन्देश के वाहक थे, जिसको पाने वाला मानव–मात्र है, चाहे वह किसी देश या काल का हो। युगों से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों की भक्त ईसाई मण्डलियाँ इस पवित्र ग्रन्थ से आत्मिक पोषण पाती रही हैं, उसका मनन कर वे उसे अपने जीवन में चरितार्थ करने की कोशिश करती रही हैं। बाइबिल का पाठ करने से मनुष्य विश्वास का जीवन बिताना सीख लेता है, तथा यही विश्वास उसे पुनः बाइबिल पढ़ने की प्रेरणा देती है।

बाइबिल का पाठ अति आवश्यक

समस्त बाइबिल एक लिखित सन्देश है, जिसे देने वाला स्वंय ईश्वर है तथा पाने वाले सभी युगों के स्त्री–पुरुष। अतः मनुष्यजाति के लिए ईश्वर का प्रेमपूर्ण विधान समझने और ईश्वर की मुक्तिदायी कृपा से लाभ उठाने के लिए बाइबिल का पाठ करना आवश्यक है।

बाइबिल का पाठ सर्वप्रथम यूख़ारिस्त आदि धर्म–विधियों में होता है। वैटिकन महासभा ने उसके पाठ को सहज और सुलभ बनाने का आदेश दिया थाः "बाइबिल शिक्षासम्पन्न खज़ाना है, जिसे खोल कर विश्वासियों के सामने रखना चाहिए, जिससे वे प्रभु के भोज में उसका रसास्वादन कर सकें" (धर्म–विधि का संविधान, 51)। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पुरोहितों और प्रचारकों का कर्तव्य है कि वे हर रविवार, पर्व–दिन और प्रतिदिन निर्धारित पाठ सुनायें। विश्वासीगण उसे ध्यान से सुनें और पाठों की शिक्षा हृदयंगम करें–यह कलीसिया की इच्छा है। उपयुक्त पाठ के अतिरिक्त विश्वासी लोग उसका व्यक्तिगत पाठ अथवा अपने परिवार में सामूहिक पाठ कर सकते हैं। ऐसे पाठ से विश्वासियों को बहुत लाभ होता है। बाइबिल के शब्द ईश्वर के शब्द हैं, इसलिए सबसे पहले बिना टिप्पणी या व्याख्या के मूल पाठ पढ़ना चाहिए। बाइबिल अथवा उसकी किसी पुस्तक को समझने के लिए मूल पाठ से परिचय अनिवार्य है।

पाठ और अध्ययन में अन्तर है। प्राथमिकता पाठ की है। यदि श्रद्धा और भक्ति के वातावरण में पाठ किया जाये, तो पाठ प्रार्थना बन जाता है। पाठ किस प्रकार करें ? पाठ का समय निर्धारित कर पाठ के पहले एकान्त में कोई व्यक्ति, घर में माता–पिता या कोई और इस पर ध्यान दे कि हम ईश्वर की वाणी सुनने वाले हैं, अतः उसे श्रद्धापूर्वक सुनना है। पाठ के बाद मौन के क्षण में इस पर ध्यान दिया जा सकता है कि यह पाठ हमारे जीवन पर किस प्रकार लागू है। अन्त में पाठ से प्राप्त कृपादानों के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया जा सकता है। पारिवारिक पाठ प्रार्थना अथवा भजन के साथ समाप्त किया जा सकता है। कितना सुन्दर है वह घर, जिस में यदि नित्यप्रति नहीं, तो समय–समय पर इस प्रकार का पाठ भक्तिपूर्वक किया जाता है। बाइबिल का अध्ययन एक अलग बात है। इस में अध्येता बाइबिल अथवा उसकी कोई पुस्तक इस उद्देश्य से पढ़ता है कि वह प्रत्येक शब्द का अर्थ, प्रसंगों का वास्तविक आशय, प्रंसगों का वास्तविक आशय, प्रंसगों की आन्तरिक संगति, लेखक–शैली, रचानाओं की ऐतिहासिक

(शेष भाग पृष्ठ 3 पर)

"धर्मियों की आत्मायें ईश्वर के हाथ में हैं। उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं होगा।" (प्रज्ञा3:1)

2005 क्रिसमस जीवन-धाम में खूब धूम-धाम से मना

जीवन-धाम का क्रिसमस स्टार

सब मिलकर हल्वा-पूडी के पैकेट बनाते हुए

हल्वा-पूडी के पैकेटों का ढेर लगा हुआ

जीवन-धाम सैक्टर-22 में क्रिसमस पर सजावट

प्रेषित व धर्मबहनें पैकिंग करने में लगे हुए

नरम-गर्म हल्वा पतीले से निकालते हुए दृश्य

सेन्टा क्लॉस के साथ खुशी से जीवन-धाम में क्रिसमस कैरल गाते हुए एक दृश्य

(पृष्ठ1 का शेष भाग) ✯ ***नया-नियम पाठ्यक्रम***

भाग का दैनिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेंगे जिसके अनुसार आप प्रतिदिन निर्धारित अध्यायों को पढ़कर6 माह के अन्दर "नये नियम" का पूरा पाठ कर सकेंगे। आशा है कि निम्नलिखित सूची आपके बाइबिल पाठ में सहायक सिद्ध होगी। प्रस्तुत है ***जनवरी के महीने का पाठ्यक्रम :***

तारीख	वचन	तारीख	वचन	तारीख	वचन
1	मत्ती1	12	मत्ती12	23	मत्ती23
2	मत्ती2	13	मत्ती13	24	मत्ती24
3	मत्ती3	14	मत्ती14	25	मत्ती25
4	मत्ती4	15	मत्ती15	26	मत्ती26
5	मत्ती5	16	मत्ती16	27	मत्ती27
6	मत्ती6	17	मत्ती17	28	मत्ती28
7	मत्ती7	18	मत्ती18	29	मारकुस1
8	मत्ती8	19	मत्ती19	30	मारकुस2
9	मत्ती9	20	मत्ती20	31	मारकुस3
10	मत्ती10	21	मत्ती21	01	मारकुस4
11	मत्ती11	22	मत्ती22	02	मारकुस5

(पृष्ठ 2 का शेष भाग)★ ★

और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि समझे। यह कार्य भी बहुत आवश्यक और रोचक है, किन्तु इसके लिए अधिकतर शिक्षक, टिप्पणी और व्याख्या का सहारा लेना पड़ता है। हर एक युग के बाइबिल के उन अध्येताओं के आभारी हैं, जो दो हज़ार वर्षों से उसका अध्ययन करते हैं तथा उसका मूलपाठ सुरक्षित रख कर नये–नये संस्करण एवं नये–नये अनुवाद प्रकाशित करते रहे हैं। इस तरह बाइबिल का पाठ और बाइबिल का अध्ययन एक–दूसरे के पूरक हैं।

निष्कर्ष यह कि बाइबिल एक ऐसा ग्रन्थ है, जो पुराना होते हुए भी निरन्तर सामायिक है जैसे ***"येशु मसीह एकरुप रहते हैं-कल, आज और अनन्त काल तक"।(इब्रानियों 13:8)*** *बाइबिल की पुस्तकों में ईसा मसीह की यह प्रतिज्ञा चरितार्थ होती है,* ***"मैं संसार के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ"।***

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

एक अद्भुत साक्ष्य- हड्डियों की बीमारी ठीक हुई

येशु की स्तुति हो! येशु का धन्यवाद! मैं, जुगुर्ता (उम्र 45 वर्ष), अपने बेटे मोहित (उम्र5 वर्ष) की दुर्गति देखकर बहुत परेशान व दुःखी हो चुकी थी। मोहित की हड्डियाँ बहुत ही नरम और कमज़ोर थीं– इतनी कि उसका हाथ पकड़ते ही हड्डियाँ टूट जाती थीं। मैंने दिल्ली में अनेक प्राइवेट हस्पतालों में इसे दिखाया था जहाँ डॉक्टरों ने कहा की यह हड्डियों के न बढ़ने के कारण छोटा ही रह जायेगा। बत्रा हस्पताल के डॉक्टर सब जाँच करके यह बताया कि यदि3 महीने इलाज करवा कर

"अपने में नमक बनाये रखो और आपस में मेल रखो।" (मारकुस 9:50)

उसके स्वास्थ्य पर कोई फर्क न पड़े तो ऑपरेशन करवाना पड़ेगा। मोहित को कपड़े पहनाना भी जोखिम भरा काम था क्योंकि उसमें उसकी कई हड्डियाँ टूट जाती थीं। उसके सीने की हड्डी बाहर को निकल आई थी और उसकी गर्दन नीचे को झुक नहीं पाती थी। साँस लेने भी उसे तकलीफ होती थी। इलाज पर मैंने हज़ारों रुपये खर्च कर दिये,पर कहीं भी उसे आराम नहीं मिला। सब जगह निराशा ही हाथ लगी।

फिर दो महीने पहले मेरी पड़ोसन ने मुझे "जीवन–धाम" में चल रही प्रार्थना व वहाँ होने वाली चंगाईयों के बारे में बताया। पहली बार आने से मोहित की हड्डियों को शक्ति मिलने लगी। मैंने उसकी दवाई उसी हफ्ते से बंद कर दी। मैं प्रतिदिन उसके साथ बैठकर नया जीवन की किताब पढ़ती तथा आशीष किया गया तेल उसके शरीर पर लगाने लगी।6 हफ्तों के अन्दर–अन्दर उसकी सीने की हड्डी सामान्य हो चुकी है। उसे अब साँस लेने में तकलीफ भी नहीं है और उसकी हड्डियों में ताकत आ गई है। प्रभु येशु के वचनों के शक्ति के द्वारा ही मेरे बेटे को एक नया जीवन, नई शक्ति मिली है। प्रभु की इस अपार कृपा के लिए उसे लाखों–लाखों बार धन्यवाद।

जुर्गुता (माँ), मोहित, नई दिल्ली

"प्रभु ही तुम्हारा रक्षक है। वह छाया की तरह तुम्हारे दाहिने रहता है।"

(स्तोत्र ग्रन्थ 121:5)

एक प्रार्थना पत्र- विदेश से दुविधा में लिखी

सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर की महिमा हो। साथ ही आप सभी प्रभु की दास–दासियों को मेरी ओर से जय मसीह।

मेरा नाम अर्जुन बहादुर है। मैं प्रभु पर श्रद्धा रखने वाला प्रभु का दास हूँ। मैं अभी साऊदी अरब की राजधानी रियाध में काम के लिए आया हूँ। मुझे यहाँ आये हुए तीन दिन हुए हैं। अभी मेरे पास बाइबिल भी नहीं है। क्योंकि यह मुस्लिम देश है इसलिए मैं बाइबिल घर पर ही छोड़ कर आया हूँ। अब मैं केवल प्रार्थना करता हूँ। इसलिए मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि आप प्रभु से मेरे लिए हमेशा प्रार्थना करते रहें कि मुझे प्रभु हमेशा प्रभु की श्रद्धा में जीवन बिताना सिखाये। वह हर शैतानी बन्धन, दुष्टात्मा, और हर अन्धकारमय शक्ति को मेरे जीवन से दूर करे, मेरी हर ज़रूरत पूरी करे एवं हर मुश्किल दूर करे। प्रभु मेरे साथ रहकर मुझे सम्भाले। मुझे पवित्र आत्मा का वरदान दे। विदेश में प्रभु हमेशा अपने पंखों की छाया में आनन्द और शान्ति के साथ रखे। मेरी कमाई की एक–एक रकम का सही उपयोग हो। वह ऐसे काम में आये जिससे मैं कर्जे से मुक्त हो सकूँ।

घर में (नेपाल) भी मेरे पिता, पत्नी, बेटा–बेटी, घर व सबकुछ प्रभु सम्भाले। उन लोगों को भी पवित्र आत्मा का वरदान मिले ताकि वो लोग भी विश्वास में आ जायें, वे हमेशा प्रभु का वचन पढ़ें, प्रार्थना करें व प्रभु पर श्रद्धा रखें। इस तरह प्रभु हमारे हर एक काम में साथ रहकर हमें आशीष व अनुग्रह दे। Sunday Prayer में जीवन–धाम में भी हमें याद कर प्रभु से प्रार्थना करना। मैं भी हमेशा आप लोगों के लिए प्रार्थना करता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि आप सभी को प्रभु बहुत–बहुत वरदान दे।

हमारे उद्धारकर्ता, जीवित परमेश्वर प्रभु येशु मसीह के पवित्र नाम की युगानुयुग महिमा होती रहे। आमेन।

मेरी यह request है कि आप लोग मुझे पत्र द्वारा प्रभु का वचन सिखाते रहें।

"जीवन-धाम" के सभी सदस्यों एवं संपादक की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की मंगल कामनाँए। आप सभी पर ईश्वर की कृपा व आशीष बनी रहे!

"ईश्वर हमारे हृदय का रहस्य जानता है। वह समझता है कि आत्मा क्या कहता है, क्योंकि आत्मा ईश्वर के इच्छानुसार सन्तों के लिए विनती करता है।"(रोमियों 8:27)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

5) मारकुस रचित सुसमाचार

d) अध्याय 1-3

इन निम्नलिखित वाक्यांशों में रिक्त स्थान भरें, जो सन्त मारकुस के सुसमाचार के पहले के 3 अध्यायों में से लिए गये हैं। उन्हें ढूँढ कर अध्याय व वाक्यांश सहित हमें उत्तर में लिख भेजें –

1)"देखिए, आपकी____और आपके भाई–_____,बाहर हैं। वे आपको____ रहे हैं।"

2) "जब तक____साथ है, क्या _____शोक मना सकते हैं?"

3) "_____उँट के राओं का कपड़ा_____और कमर में चमड़े का पट्टा____बाँधे रहता था। उसका भोजन____और वन का मधु था।"

4)"हम आसपास के____में चलें। मुझे वहाँ भी_____देना है– इसलिए तो आया हूँ।"

5)"_____ के दिन भलाई करना_____है या बुराई, जान बचाना या मार ड़ालना?"

6)"_____आत्मा _____ को देखते ही दण्ड़वत् करते और चिल्लाते थे–" आप ईश्वर के _____हैं।"

7)"_____दिवस मनुष्य के लिए बना है, न कि _____विश्राम–दिवस के लिए। इसलिए _____पुत्र विश्राम–दिवस का भी स्वामी है।"

8)"कोई _____कपड़े पर_____कपड़े का पैबन्द नहीं लगाता।"

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

6) क्रिसमस-प्रभु येशु का जन्मदिन

1)रक्त,शरीर,मनुष्य,शब्द।(योहन1:13-14)
2)प्रसव,येशु,महान्,पुत्र।(लूकस1:31-32)
3)येशु,लोगों,पापों से।(मत्ती1:21)
4)कैसर अगस्तस, क्विरिनियुस, राज्यपाल। (लूकस 2:1-2)
5)अपने,लोगों,नाम,ईश्वर।(योहन1:11-12)
6)पहलौठे,कपड़े,चरनी,सराय। (लूकस2:7)
7)यहूदियों,राजा,तारा,दण्ड़वत्।(मत्ती 2:2)
8)बेथलेहम, घटना, प्रभु, मरियम, चरनी, बालक।(लूकस 2:15-16)
9)बालक,मुझे,दण्ड़वत्।(मत्ती 2:8)
10)छठे,गब्रिएल,नाज़रेत,कुँवारी।(लूकस1:26)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दु:खी.....हैं?
क्या आप रोगी.....हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रात:9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम'696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"जो छोटे बालक की तरह ईश्वर का राज्य ग्रहण नहीं करता, वह उसमें प्रवेश नहीं करेगा।"(मारकुस10:15)

Edited & Published by Thomas Aripalam, 553/23, Faridabad Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana